कुक्कुटों की प्रजातियां एवं विभिन्न आयु वर्ग के कुक्कुटों की देखभाल

डा0 आर के शर्मा

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, पंतनगर–263145

पशुपालन उत्तरांचल के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के जीवन यापन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है व लगभग 70 प्रतिषत लोग इस कार्य से जुड़े हुए हैं। भारतवर्ष में औद्योगिक कुक्कुट पालन की शुरूआत पिछले सदी के सातवें दषक से शुरू हुई तथा पिछले 3–4 दषकों में अंडे व ब्रायलर उत्पादन की वृद्धि दर क्रमषः 7–8 तथा 10–12 प्रतिषत रही है। भारत में प्रति व्यक्ति अंडे व ब्रायलर की उपलब्धता बहुत कम अर्थात 92 अंडे व 6 कि.ग्रा. मांस प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष है जबकि यह कम से कम 180 अंडे व 11 कि.ग्रा. मांस प्रति वर्ष होनी चाहिए जबकि विष्व की अंडा उपलब्धता 120 अंडे व विकसित देशों की 250 अंडा हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी बदतर है क्योंकि वहॉं अंडे की खपत 4 अंडे जबकि शहरों की 175 अंडे है।

कुक्कुट पालन व्यवसाय में मोटे तौर पर दो वर्गो में बांट सकते हैं। पहला– औद्योगिक अथवा सघन कुक्कुट पालन जो कि शहरी व अर्द्व शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित है जिसमें कि व्यवसायी बड़े स्तर पर विदेशी मूल के कुक्कुट पालते हैं जिनकी कि उत्पादकता विष्व स्तर की होती है जो कि 330 अण्डे प्रति वर्ष एवं 2500 ग्राम वजन 6 सप्ताह के अन्दर अर्जित करने की क्षमता रखते हैं तथा इसमें आधुनिकतम तकनीक व प्रबन्धन व्यवसाय अपनायी जाती है। दूसरी श्रेणी का कुक्कुट पालन को हम ग्रामीण कुक्कुट पालन अथवा घर के पिछवाड़े में मुर्गी पालन (Backyard Poultry)कहते हैं जो कि लगभग हर गांव में अधिकतम ग्रामीणों द्वारा 5–10 मुर्गियों को रखकर किया जाता है। ये मुर्गियॉ पूरे दिन घूम–घूम कर अनाज इत्यादि के दाने, घास, खरपतवार, कीड़े–मकोड़े व घरेलू बचा हुआ पदार्थ खाकर पलती–बढ़ती हैं तथा बिना किसी खर्च के ही 50–60 अंड़े, चूजे व मांस का उत्पादन करती हैं।

कुक्कुट उत्पादन के लाभ

- स्वरोजगार (पूर्व अथवा अंशकालिक) की प्राप्ति
- कम समय में आय शुरू (ब्रायलर से 5 सप्ताह बाद)
- कम पूंजी व स्थान की आवश्यकता
- सामान्य प्रशिक्षण अथवा अनुभव ही पर्याप्त
- शीघ्र उत्पादन (लेयर से 5 माह बाद अंडा उत्पादन शुरू)
- बाजार आसानी से उपलब्ध
- 1000 ब्रायलर फार्म से रूपया 10000 – 15000 प्रति दो माह आय
- 1000 मुर्गियों वाले फार्म से 15000 रूपया प्रतिमाह आय

कुक्कुट उत्पादन के महत्वपूर्ण बिन्दु

- सही नस्ल का चुनाव
- संतुलित आहार
- सस्ता एवं आरामदायक आवास
- उत्तम स्वास्थ्य प्रबंधन व उत्तम दैनिक एवं विपणन प्रबंधन

कुक्कुट उत्पादन हेतु सही नस्ल का चुनाव

व्यावसायिक कुक्कुट पालन मुख्यतया या तो अंडे उत्पादन के लिए अथवा ब्रायलर उत्पादन के लिए किया जाता है। घरेलु स्तर पर Backyard Poultry अपनायी जाती है। जिसमें दुकाजी नस्ल (Dual purpose) की मुर्गियां पाली जाती हैं।

1.अंडे उत्पादन (**Layer Farming**) अंडा उत्पादन हेतु विशेष प्रकार के नस्लों/ब्राडों के एक दिन के चूजे लाकर फार्म पर पाला जाता है जो लगभग 20 सप्ताह (5 माह) पर अंडा उत्पादन शुरू कर देते है तथा पूरे वर्ष अंडे देते रहते हैं तत्पश्चात इनकी छंटाई/बिक्री कर दी जाती है क्योकि इनसे अंडे लेना लाभदायक नही रहता है। हालांकि इसमें आमदनी 5 माह पर मिलनी शुरू होती है किन्तु इसमें आमदनी अच्छी, मेहनत कम व सुविधा अधिक है।

2.ब्रायलर फार्म (**Broiler Farming**) यह कार्य ब्रायलर/कुक्कुट मांस उत्पादन हेतु किया जाता है जिस हेतु विशिष्ट प्रकार के नस्लों/ब्राडों के एक दिन के चूजे फार्म पर लाकर पाले जाते है तथा 5–6 सप्ताह बाद 2–2.5 कि.ग्रा. वजन प्राप्त करने के उपरान्त बेच दिया जाता है। इस कार्य में आमदनी जल्दी शुरू होती है पर ब्रूडिंग में अधिक मेहनत व परेशानी होती है।

कुक्कुटों में कई प्रकार की नस्लें (Breeds) तथा उनकी प्रजातियां (Varities) पायी जाती है किन्तु व्यावसायिक कुक्कुट पालन हेतु 8–10 नस्लें ही प्रयोग की जाती है। कुक्कुटों को दो आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

(अ) उपयोगिता के आधार पर वर्गीकरण : इसके अन्तर्गत कुक्कुटों को 6 श्रेणियों में बांटा गया है ये निम्न है :

1. हल्की/अंडे वाली मुर्गियां (**Light/Egg Type**) इस किस्म की मुर्गियां हल्के शरीर की होती है जिससे उनकी दाने को अंडे में परिवर्तन करने की क्षमता उच्च कोटी की होती है। ये कुडक (Broody) नहीं होती तथा वर्ष में 300 से अधिक अंडे देने की क्षमता रखती है। इस श्रेणी में सर्वप्रथम ब्हाइट लैगहार्न (WLH) नस्ल की मुर्गियाँ अथवा उनके संकरण से तैयार विभिन्न ब्राडों के संकर मुर्गियां आती है। इसके अतिरिक्त अन्य नस्लें जैसे मिनोर्का व एनकोना भी अंडे के लिए उपयुक्त है किन्तु ज्यादा लोकप्रिय नहीं है। वैसे पिछली सदी के सत्तर के दशक से कुक्कुट उद्योग में व्यावसियकता बढ़ी है तब से नस्ल का मामला आम कुक्कुट पालक के लिए कोई मायने नहीं रखता है क्योकि कुक्कुट प्रजनन उद्योग से जुड़ी विश्व की बडी–बडी 10–12 कंपनियों ने अंडे तथा ब्रायलर उत्पादन हेतु क्रमशः ब्हाइटलैगहार्न तथा प्लाइमाउथ रांक व सफेद कार्निश नस्लों के विभिन्न विशिष्ट प्रकार के स्ट्रेन/लाइन बनाकर तथा उन्हें संकरित करके नये–नये ब्राडों के नाम से संकर चूजे पैदा किये है। विश्व के सभी देशों में इनकी फ्रैन्चाइची फर्म/हैचरियाँ है जो इन विश्वस्तरीय मानकों के चूजों को उन्हीं के ब्राडों के नाम से उपलब्ध कराती है। आज हमारे देश में सभी प्रमुख 10–12 अन्तराष्ट्रीय ब्रान्ड उपलब्ध है इनमें से 5–6 ब्रान्ड लेयर के है तथा विश्व में उत्पादित अंडे का एक बड़ा हिस्सा ब्हाइट लैगहार्न नस्ल के विभिन्न स्ट्रेन संकर/ब्राडों से ही पैदा होता है।
2. भारी अथवा मांस वाली नस्लें (**Heavy or Broiler Type**) इस श्रेणी की मुर्गियाँ भारी शरीर वाली होती है इनकी आनुवंशिक संरचना इस प्रकार की होती है कि ये ज्यादा दाना खाकर ज्यादा मांस पैदा करने की क्षमता रखती है। इनका मांस मुलायम व कम रेशे वाला होता है जैसे कि आज बाजार में उपलब्ध लगभग सभी ब्रान्डों का दाना परिवर्तन अनुपात (Feed Conversion Ratio - FCR) 1.6 –1.7 है अर्थात ये प्रति किलो देहभार पैदा करने के लिए मात्र 1.6–1.7 किग्रा. दाना खाती है जो कि काफी अच्छा अनुपात है। इस श्रेणी में प्लाइमाउथ राक तथा कार्निश नस्लों को उपयोग क्रमशः माता व पिता के स्थान पर करते हुए संकर चूजे प्राप्त किये जाते है। मातायें 6–7 माह पर अंडे देती है तथा लगभग 200 अंडे तक देती है। आज विश्व बाजार में उपलब्ध 5–6 प्रमुख ब्रायलर ब्रान्ड इन्हीं नस्लों को प्रयोग करके पैदा किये गये हैं तथा विश्व में उत्पादित ब्रायलर मांस का प्रमुख हिस्सा इन्हीं ब्रान्डों के चूजों से पैदा होता है।

482901353

3. **दुकाजी नस्लें (Dual Type)** इस श्रेणी की मुर्गियाँ अंडे व मांस वालों की बीच की होती है अर्थात ये दोनों गुणों के लिए ठीक होती है। इनका उपयोग छोटे स्तर पर घर के पिछवाड़े (Back Yard Poultry) में कुक्कुट पालन के लिए खूब किया गया था। ये 6 से 7 महीने में अंडा देना शुरू करती है तथा लगभग 220–260 प्रतिवर्ष देती हैं। इस श्रेणी में प्रमुख नस्लें है–रोड आइलैड रैड (RIR),न्यू हैंम्पशायर (NH) व आस्ट्रोलोर्प। ये मुर्गियाँ काफी सख्त प्रकार की होती है तथा ये पहाड़ी व मैदानी दोनो ही क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। रोड आइलैंड रैड नस्ल काफी लोकप्रिय रही है तथा इसका उपयोग विभिन्न रूपों में हुआ है। कुछ क्षेत्रों में दुकाजी नस्लों की मांग को देखते हुए कुछ कंपनियों ने भारी व हल्के रंगीन नस्लों को मिलाकर क्रोइलर (Kuroiler) नामक संकर नस्ल बनाई है जो कि असंगठित क्षेत्र में विद्यमान छोटे कुक्कुट पालकों (Back Yard) के बीच काफी लोकप्रिय हो रही हैं।

बाद की बची हुई तीन श्रेणियों की नस्लें व्यावसायिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं है इन्हें शौक हेतु शौकीन (Fanciers) लोगों द्वारा पाला जाता है।

(ब) कुक्कुटों के वर्गीकरण का दूसरा आधार नस्लों की उत्तपति स्थल है इस आधार पर मुर्गियों को निम्न 4 वर्गों में बांटा गया है।

(1.) अमेरिकन वर्ग (**American Class**)
(2.) इग्लिष वर्ग (**English Class**)
(3.) भू–मध्यसागरीय वर्ग (**Mediterranean class**)
(4.) एशियन वर्ग (**Asiatic Class**)
इन वर्गों की प्रमुख नस्लों का संक्षिप्त विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

Class	Breed	Varieties
American	Plymouth Rock	Barred, Whites, Buff, Patridge, Silver pencilled
	Wyandotte	Whites, Silver laced, Patridge
	Rhode Island Red	Rose comb, Single comb
	Rhode Island White	Rose comb
	New Hampshire	Single comb
	Jersey Black Giant	Only single comb
English	Orpington	Buff, Whites, Black
	Sussex	Light, Speckled
	Australorp	Black
	Dorking	Black
	Cornish	Whites, Rock
Asiatic	Brahma	Light, Dark
	Long Shan	Black, Whites
	Cochin	Buff, Whites, Black, Patridge
Mediterranean	Leghorn	White, Dark, Light, Buff
	Minorca	White, Black, Buff
	Ancona	Single comb, Rose comb
	Blue Andulusian	Single comb

(1.) अमेरिकन वर्ग : इस वर्ग की नस्लें मध्यम आकार की होने के कारण दुकाजी प्रकार की होती है तथा लाल रंग के अंडे देती है।

(2.) इग्लिष वर्ग : इस वर्ग की नस्लें मध्यम आकार की होने के कारण दुकाजी प्रकार की होती है। इस वर्ग की कार्निश नस्ल विश्व की सबसे भारी नस्ल है तथा इसका प्रयोग ब्रायलर्स के लिए संकरण में किया जाता है सभी नस्लें लाल रंग के अंडे देती है।

(3.) भू–मध्यसागरीय वर्ग : इस वर्ग की नस्लें हल्के आकार की होने के कारण अंडे उत्पादन के लिए अच्छी है ये सभी सफेद रंग के अंडे देती है। व्हाइट लैगहार्न इस वर्ग की प्रमुख नस्ल है।

(4.) एशियन वर्ग : इस वर्ग की ज्यादातर नस्लें व्यावसायिक स्तर पर लोकप्रिय नहीं है तथा कुछ की संख्या भी काफी कम हो गयी है। ये लाल रंग के अंडे देती है।

कुक्कुटों की विभिन्न प्रजातियां एवं ब्रान्ड

- निजी क्षेत्र के लेयर ब्रान्ड - Babcock BV -300 (White), Babcock BV -380 (Brown) Hyline-W-36, Hyline Brown, Bovans White, Deejay DeKalb, Lohman, 'H&N' Nick Chick
- निजी क्षेत्र के ब्रायलर ब्रान्ड - Vencobb, Ross, Arbor Acres, Hubbard, Tegel, Avian
- सरकारी क्षेत्र के लेयर ब्रान्ड - Cari Priya, Krishi Layer, Cari Sonali
- सरकारी क्षेत्र के ब्रायलर ब्रान्ड - Caribro Multicolored, Caribro Vishal (White Broiler), Krishibro, Chabro
- गिनी फाउल (Guinea fowls) - Kadambari, Chitambari, Swetambari
- जापानी तीतर (Japaenese quails) - Cari Uttam (Broiler Quail), Cari Pearl (White Egger), Cari Ujjwal Cari Shweta , Cari Brown
- टर्की (Turkey) - CARI Virat
- बत्तख (Ducks)- Moti, Khaki, Khaki Compbell, Pekin
- ग्रामीण क्षेत्रों में कुक्कुट पालन हेतु दुकाजी उद्देष्य वाली नस्लें/ ब्रान्ड (Dual-purpose variety for backyard poultry) - Cari Debendra, Vanaraja, Gramapriya, Srinidhi, Kuroiler

आवास प्रबन्ध (डीप लीटर प्रणाली)

- कुक्कुट आवास को रिहायशी इलाकों, सड़क व रेल मार्गों से दूर बनायें
- कुक्कुट आवास की पहुँच मार्ग से जुडे हों
- कुक्कुट आवास की आवास ऊँचे स्थान पर हों
- कुक्कुट आवास की पूर्व–पश्चिम दिशा में बनायें

- दो घरों के बीच 30 फीट की दूरी
- घर के अन्दर की चौड़ाई 30 फीट से अधिक नहीं
- लम्बाई आवश्यकतानुसार
- कुक्कुट आवासों के बीच की कतार की दूरी 60 फीट हो
- छत की उँचाई 12 से 15 फुट
- छत 2–3 फुट दीवार से आगे निकली हुई (छज्जा / overhang)
- फर्श पक्का सतह से 2–3 फुट ऊँचा
- छत अस्वेस्टस शीट अथवा छप्पर
- स्थानीय उपलब्ध सामग्री का अधिकतम उपयोग
- दीवारों का निचला 2 फुट का हिस्सा ईटों का व ऊपरी 6 फुट का हिस्सा जालीदार

ब्रूडिग प्रबन्ध (डीप लीटर प्रणाली)

- ब्रूडर हाउस ग्रोवर तथा लेयर हाउस से 300 फीट दूर बनाना चाहिए
- चूजों को लाने से पहले पूरे ब्रूडिंग परिसर की पूर्णतया सफाई करके कीटाणु रहित बना लेना चाहिए
- ब्रूडर घर को पानी में कीटाणुनाषक डालकर प्रेशर से धुलाई कर लें, फर्श को 40 प्रतिषत कास्टिक सोडा डालकर धोयें
- इसके बाद घर को 1 – 2 हप्ते खाली रहने दें जिससे कि रोगाणुओं के जीवनचक्र को तोड़ा जा सके
- एक दिन के चूजे खरीदकर उन्हें डीप लिटर यानी गहरी बिछावन अथवा केज यानी पिंजडा प्रणाली में रखा जाता है
- इसमें ब्रूडर हाउस के फर्श पर धान की भूसी या बुरादे की 2 से 3 इंच परत बिछाकर उसके ऊपर अखवारी कागज की 5 पर्त बिछा देते है जिससे चूजे बिछावन खाकर मरे नहीं
- चूजों को शुरू के चार सप्ताह तक कृत्रिम ताप देने की आवष्यकता होती है क्योंकि ये स्वयं अपने शरीर का तापमान स्थिर नही रख सकते है
- इसके लिए फर्श पर कागज की पर्तो के ऊपर ब्रूडर रखते है जिसके नीचे चूजों को रखा जाता है ब्रूडर में 24 घन्टे गर्मी देने व प्रकाश देने के लिए मौसम के अनुसार बल्ब तथा हीटर लगायें
- प्रथम सप्ताह में ब्रूडर का तापमान $90–95^0$ F रखते हैं जिसे 5^0 F प्रति सप्ताह की दर से घटाते जाते हैं और इस प्रकार पाचवें सप्ताह में ब्रूडर निकाल सकते हैं।

- यदि बिजली नही है तो प्रकाश के लिए लालटेन और गर्मी देने के लिए बुखारी आदि की व्यवस्था भी होनी चाहिए
- ब्रूडर के नीचे किनारे पर दाने व पानी के बर्तन रखने चाहिए। एक ब्रूडर में 250 बच्चों के लिए शुरू में 4 से 5 दाने व पानी के बर्तन पर्याप्त होते है
- ब्रूडर बिछावन के बीचों बीच रखें व 2 फुट के अन्तर से चिक गार्ड का घेरा बना देना चाहिए जो कि चूजों को भटकने से रोकता है
- चूजे आने पर उन्हें एक – एक पकड कर गिन – गिन कर उनकी चोंच विटामिन ए व सी युक्त पानी में डुबोकर ब्रूडर के नीचे छोड़ते जायें पहले हफ्ते में उनकी खास देखभाल की जरूरत होती है।
- अगर ब्रूडर के नीचे तापमान ठीक होगा तो चूजे आराम से सभी जगह घूमते व दाना पानी पीते दिखेंगे कम तापमान होने से जगह –जगह झुंड में रहेंगे व अधिक तापमान होने पर चिकगार्ड के पास जाकर बैठेगे इन दोनो ही दशाओं में चूजों की बढवार ठीक नही होगी
- रोजाना कागज की एक परत निकालते जाये। ब्रूडर की ऊँचाई को चूजों की उम्र बढ़ने के साथ – साथ बढाते रहे तथा साथ ही चिकगार्ड को खिसका कर जगह बढाते रहना चाहिए।

- तीसरे सप्ताह बाद चिक गार्ड हटा दें। चूजों के फार्म पर पहुचने से 24 घंटे पूर्व ही सारी तैयारी हो जानी चाहिए

- चूजों के लिए पहले 3 सप्ताह तक आधा वर्गफुट तथा 3–6 सप्ताह तक एक वर्गफुट स्थान पर्याप्त रहता है।

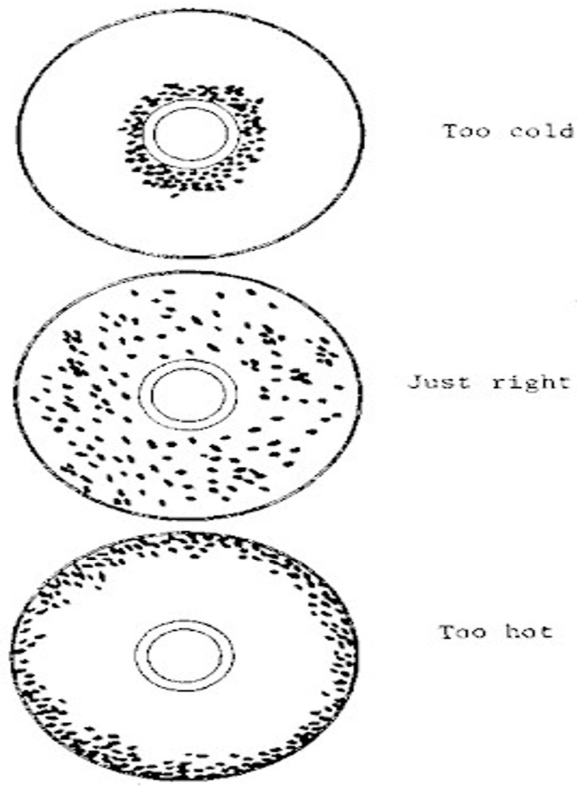

आहार एवं जल प्रबन्धन

- लेयर चूजों को चिक फीड खाने को देना चाहिए जिसमें 22 प्रतिषत प्रोटीन व 2700 किलो कैलोरी ऊर्जा होती है
- ब्रायलर चूजों के लिए शुरू के प्रथम सप्ताह तक ब्रायलर प्री–स्टार्टर दाना तथा 2–3 सप्ताह तक ब्रायलर स्टार्टर दाना इसके बाद(4–6 सप्ताह) ब्रायलर फिनिशर दाना देना चाहिए

- इसके अलावा इन राशनों में 1.2 प्रतिषत कैल्शियम, 0.5 प्रतिशत फास्फोरस, 6000 आई.यू. प्रति किलोग्राम विटामिन ए, 600 आई.यू. प्रति किलोग्राम विटामिन डी, 20 आई.यू. प्रति किलोग्राम विटामिन ई एवं 1400 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम कोलीन होनी चाहिए।

- इसके अतिरिक्त आहार में काक्सीडियोस्टेट एवं वृद्धि वर्धक प्रति जैविक औषधियाँ देना आवश्यक एवं लाभकारी है। दाना या तो स्वयं फार्म पर तैयार कर सकते हैं या फिर किसी प्रतिष्ठित फीड कम्पनी से खरीद सकते हैं।

- मेरेक्स रोग से बचाव के लिए उन्हें हैचरी में ही टीका लगाना चाहिए फिर पांचवें दिन पर रानीखेत रोग से बचाव के लिए F_1 टीके की एक – एक बूंद आंख व नाक में डालनी चाहिए
- दूसरे हप्ते में लेयर चूजों की चोंच को डीबीकर की मदद से थोडा सा काट दें इस कार्य को किसी कुशल व अनुभवी व्यक्ति से ही करवाना चाहिए।
- रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करना आवश्यक है
- चूजों के तीन हप्ते पूरे होने के बाद से उन पर काक्सीडियोसिस यानी खूनी दस्त नामक रोग के लिए नजर रखनी चाहिए यह बिछावन जनित घातक बीमारी है जो एक प्रोटोजोआ से फैलती है व काफी नुकसान कर सकती है इससे बचाव के लिए बिछावन को सूखा रखें, पानी या दाने में काक्सीनाशक दवा मिलायें व रोग होने पर पशुचिकित्सक की राय लें।

पठोरों का प्रबन्ध

- नौवें सप्ताह से पठोरों को ग्रोवर हाउस में स्थानान्तरित कर दें अथवा ब्रूडर हाउस में ही उनका फर्ष, दाने व पानी का स्थान बढ़ा दें जो कि क्रमषः 1.5 वर्गफुट, 4 इंच व 1 इंच प्रतिपक्षी होना चाहिए
- साथ ही उन्हें ग्रोवर दाना देना शुरू करदें जिसमें कि 16 प्रतिषत प्रोटीन व 2600 किलो कैलोरी ऊर्जा होनी चाहिए। 9 से 18 वें सप्ताह के दौरान उन्हें रात्रि में प्रकाष की आवष्यकता नही होती।
- दाना यदि फार्म पर नही बना सकते तो किसी अच्छी व्यवसायिक कम्पनी से खरीदना चाहिए वैसे फार्म पर बना दाना सस्ता पड़ता है।
- 15 वें सप्ताह पर फिर से उनकी चोंच काटनी चाहिए।

लेयर प्रबन्ध

- सौलह व अठारह सप्ताह के बीच पठोरों को लेयर हाउस में स्थानान्तरित कर देना चाहिए व इनका फर्श, दाना व पानी का स्थान भी बढ़ा देना चाहिए जो कि क्रमषः 2 वर्गफुट, 6 इंच व 1.5 इंच प्रति पक्षी होना चाहिए।
- उन्नीसवें सप्ताह के बाद अंडा मिलना शुरू हो जाता है अतः इन्हें लेयर दाना देना शुरू कर देना चाहिए जिसमें 18 प्रतिषत प्रोटीन व 2700 किलो कैलोरी ऊर्जा होनी चाहिए
- इसके अलावा मुर्गियों को अब 16 – 17 घंटे प्रकाश की व्यवस्था भी करनी चाहिए।
- अंडा उत्पादन शुरू होने के समय से 45 मिनट प्रकाश प्रति सप्ताह बढा देना चाहिए जब तक कि प्रकाष की अवधि दिन व कृत्रिम प्रकाष को मिलाकर 16 – 17 घंटे तक न पहुँच जाय।

- अगर दिन की अवधि 12 घंटा है तो 2 – 2 घंटे कृत्रिम प्रकाश सुबह व शाम को देना चाहिए।

- कमरे के कोने में अंडे देने के लिए घोसलों का प्रबन्ध भी करना चाहिए इसके लिए चौड़े मुह वाले मटके इस्तेमाल कर सकते हैं या फिर टिन के घोंसले बनवाये जा सकते है।

- जिनके अन्दर बुरादा या भूसी रखनी चाहिए जिससे अंडे टूटें नही।

- लेयर हाउस से अंडे दिन में 4 – 5 बार उठाने चाहिए जिससे अंडे टूटेगे नही और मुर्गियों को अंडे खाने की बुरी आदत भी नही पड़ेगी। एक घोंसला 4–5 मुर्गियों के लिए पर्याप्त होता है।

स्वास्थ्य प्रबन्ध

- मुर्गियों में नियमित टीकाकरण अवश्य करायें।
- यदि फार्म पर किसी बीमारी के लक्षण दिखायी दे तो तुरन्त पशुचिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए अन्यथा नुकसान हो सकता है।

- फार्म पर सफाई का विशेष ध्यान रखें जिससे कि रोगाणुओं को पनपने का अवसर न मिले।

- फार्म पर आने जाने वालों का प्रवेश प्रतिबन्धित होना चाहिए यदि आना आवश्यक है तो गेट पर ही स्नान कराकर व कपड़े जूते बदल कर ही अन्दर आने देना चाहिए

- आल इन आल आल आउट' प्रणाली अपनानी चाहिए।

- जहाँ तक संभव हो एक मुर्गी घर के श्रमिक को दूसरे घर में नही जाने चाहिए।

- मरे पक्षियों को शव परीक्षण के उपरान्त दूर ले जाकर जला देना चाहिए। कूड़े करकट व पुराने बिछावन को कहीं दूर ले जाकर डालना चाहिए।

उत्तराखण्ड में कुक्कुट पालन की संभावनायें

- उत्तराखण्ड में औद्योगिक व ग्रामीण कुक्कुट पालन की अपार संभावनायें हैं क्योकि इनकी मांग पूरी करने हेतु यहॉ पड़ोसी राज्यों से ब्रायलर व अंडे आते हैं तथा इस हेतु तराई क्षेत्र में मुर्गियों के लिए आवष्यक धान, चावल, टूटा चावल, चावल की पालिष व धान की भूसी (विछावन हेतु) तथा सोया के विभिन्न उत्पाद जैसे पूर्ण सोया, सोया खली, मक्का व अन्य प्रति उत्पाद प्रचुरता में उपलब्ध हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में मोटे आनाज, घरेलू अपशिष्ट व अन्य प्रति उत्पाद ग्रामीण कुक्कुट पालन हेतु उपलबध हैं। हमारे यहॉ की देशी मुर्गियों की उत्पादकता अन्य देशों की देशी मुर्गियों से काफी कम है उदाहरणार्थ चीन की देषी मुर्गियों की उत्पादकता 120–130 अंडा प्रति वर्ष है तथा चीन में इसकी संख्या लगभग 80 प्रतिषत है तथा चीन विश्व में अंडा उत्पादन में प्रमुख देश है। हम लोग भी देशी मुर्गियों की उत्पादकता बढ़ाकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को इसे पालने के लिए प्रोत्साहित कर लोगों की पारिवारिक आय दोगुनी कर सकते हैं साथ ही कम दरों पर उन्हें गांव में ही प्रोटीन का स्रोत भी उपलब्ध करा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कुक्कुट उत्पादों की उपलब्धता बहुत कम तथा कीमतें शहरी क्षेत्रों से दोगुनी तक हैं जिसके कारण यह आम ग्रामीण लोगों की पहुंच से बाहर हो जाते हैं खासकर पर्वतीय क्षेत्रों में। इसका कारण सारे औद्योगिक कुक्कुट

व्यवसाय का शहरी व अर्द्वशहरी क्षेत्रों तक सिकुड़ जाना है। अतः आज आवश्यकता है ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण कुक्कुट व्यवसाय को बढ़ाने व प्रोत्साहन देने की जैसा कि बांग्लादेश, मालावी, मोरोक्को, उगान्डा, मोजाम्बिक, बुर्किना फासो, क्यूबा व वैनाइन अत्यादि देशों में किया जा रहा है।

- ग्रामीण कुक्कुट पालन के लिए बाहर से अतिरिक्त साधन लगाने की आवष्यकता नहीं होती है। इसके लिए पंतनगर विष्वविद्यालय में उपयुक्त तरह की मुर्गियां व चूजे उपलब्ध हैं जो कि देशी मुर्गियों की तुलना में दोगुना अंडा व मांस पैदा कर सकते हैं। प्रदेश में कुक्कुट पालन को बढावा देने हेतु भंडारण सुविधा व प्रोसेसिंग प्लांट लगाने की भी आवश्यकता है । ग्रामीण क्षेत्र में कुक्कुट पालकों को मुर्गे व अंडे का अचार इत्यादि का प्रशिक्षण देकर इनके उत्पादों का मूल्य संवर्धन किया जा सकता है जिससे कि इन परिवारों की आय बढ़ेगी। इस हेतु आवश्यक प्रशिक्षण की सुविधा विश्वविद्यालय में उपलबध है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में ब्रायलर एवं कायलर पालन उद्योग अपनाकर बेरोजगार लोग 5–10 रूपये प्रति पक्षी आय अर्जित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कुक्कुट प्रजातियों को भी अपनाकर बेरोजगार व्यक्ति अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं जैसे कि गिनी फाउल एक ऐसी अफ्रीकी मुर्गी है जो कि स्वयं चरकर विना दवा वैक्सीन के अच्छा मांस देती है।

कुक्कुट उद्योग हेतु आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने के प्रमुख स्थान

लेयर एवं ब्रायलर चूजेः

गैर सरकारी क्षेत्र :

- कैग फार्मस प्रा.लि., गुडगांव, हरियाणा
- वैंकटेष्वर हैचरीज एण्ड ब्रीडिंग फार्म, बल्लू वाला चौक,देहरादून।
- स्काईलार्क हैचरी,ग्राम अण्टा,तहसील सफीदों,जींद, हरियाणा।
- सिन्धू ब्रायलर ब्रीडर्स, जी.टी.रोड, साहाबाद, कुरूक्षेत्र, हरियाणा।

सरकारी क्षेत्रः

- सेन्ट्रल पोल्ट्री ब्रीडिंग फार्म, इण्डस्ट्रियल एरिया,चण्डीगढ़
- केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर,बरेली
- शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला, पन्तनगर, ऊधमसिंह नगर।
- राजकीय पोल्ट्री ब्रीडिंग फार्म, कालसी, देहरादून।

किसान भाई मुर्गीपालन के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए पंतनगर विष्वविद्यालय से सम्पर्क कर सकते है।

संम्पर्क सूत्रः 9837637244 9412121081